7. किसानी गीत–

1. हार जोतवा

किसानी गीत माने किसानेक गीत मेनेक खेती–बारी से जुड़ल गीत जकर में रोपनी–कटनी करो गीत सामिल हे। खोरठा लोकगीतें किसान गीत पावल जाहे। ई गीत झुमइर रूपे गावल जाहे। रोपनी सभे धान रोपेक पहर गाव हथ। हियां पटतइर रूपे कुछ गीत देल जाइ रहल हे–

छोटे–मोटे टोपरा, हार जोते छोकरा
रे भिजी गेइल, एड़ी सोहर धोतिया 2
मिंजे दे हो मिंजे दे हो, एड़ी सोहर धेतिया
किनी लेबइ नउतन धोतिया, किनी लेबइ ....
किनी लेबइ चोपतल धोतिया, किनी लेबइ .....

2. खेती–आबाद गीत

कहाँ से उपजे, सीता साइल धनवाँ
कहाँ से उपजे, लर.बांसा हो?
बहियारे उपजइ, सीता साइल धनवाँ
आर पाहारे उपजइ लर बासा हो!
अरे हो! कोनें जे काटतइ, सीता साइल धनवा हो
कोने जे काट तइ, लर–बँसा हो ?
सइयाँ मोरा काटतइ, सीता साइल धनवाँ हो
ससुर मोरा काटता लर बाँसा हो।
अरे' हो! कहाँ जी राखबइ, सीता साइल धनवाँ हो
कहाँ जे राखबइ लर बाँसा हो?
डिमनीञ राखवइ सीता साइस पनवाँ हो
घरवा छारातइ लर बाँसा से हो !

3. झुमइर – भदरिया

गोला बरदा नाइर जोते बरिया
सइये बारीं, साग बुनली गंधरिया। सइये बारीं
साग तोरे गेली, देवरा के बरिया, बारिक धारी×।।
सागा तोरइते देवरा, धरल हामर बँहिया, सइये बारी×।
छोडू छोडू देवरा, हामर बहिंया,
आबे नाही साग तोरब गंधरिया, आबे ना ही

4. आय गेलइ सावन मास, रोपा रोपन चोथब घास

सजनी भाय! खेती करब बनब किसान।
झर–झर बुंदा गिरे, भिंजी–भिंजी काँपइ परान?
सजनी भाय! भूखे पियासे काँपहइ परान।
बुढ़ा ससुर हार जोते, कलवा तो नाहीं गेल,

सजनी भाय! आइर छोलेक बाकी रही गेल।
साल भइर के जोत, करल, एके दिनें ताक गेल
सजनी भाय! सोचइते–बुझइते दिना गेल।

ई गीते खेतीक महिनाक बात हे। सावन मास अइते खेती करेक उता–सुता करल जाहे। झर–झर पानी गिरे लागल, छाता–छोपी कर जोगाड़ नाञ हे, भींइग–भींइग के जान काँपते, घारे खरचीक टान हेइ गेल, कलवा कर ठेकान नाञ हेल, बुढ़ा बरद से बुढ़ा ससुर हार जोते लागल हथ। आइर छोलेक बाकी रइह गेल। ताक पार हेल बादे कुछो उपाय नाञ सुझत। ई नीयर ई गीते एगो किसान मेहरारूक बेथा उजागर हेल हे।

5. रोपलो नान्ह धान, देखी मन धान

रउदा देखी, आरीञ बइसी, भाभहइ किसान !
एसों के जान, कइसे बाँचतइ परान। एसो के जान ...
बाइद–कानारिक चास, नान्ह धाने नखइ आस
भाभि–भाभि मना हवइ झान हो!
मुड़ी धरी काँद हइ किसान हो,
एसो के जान, कइसे बचतइ परान हो।

ई गीते किसानेक करूण बेथा मुलक हे। सरू (नान्ह) धनेक चास करल, मगुर समय पर पानी टान हेइ गेल, रउद उगल देइख के किसान मुँडीञ हाथ धइके भीतरे भीतरे कलइप रहल हे, काँइद रहल कि एसो के जान, कइसे जान बँचत मेनेक एसो अकाल हेइ जाइत।

8. खोरठा लोकगीतें प्रकृति चित्रण

झारखण्ड कर माने हे झार–झूर से भोरल खंड (प्रदेश) मेनेक झारखण्डेक ढेइर भाग बोन झारें भोरल हे। हियांक लोक के ऊ प्रभावित करहे। खोरठा लोकगीतें एकर ढाँगा रूप पावल जाहे, काहे कि खोरठाक साहित परकीरतिक कोराञ–कांखाञ जनमल आर बाढ़ल हे। खोरठा छेतरेक लोक परकीरतिक संगे खेले हे हाँस हे, काँद हे, नाचे–गावे हे। सेइ ले परकीरतिक पइत करवटेक छाप खोरठा लोकगीते देखल जा हे। डॉ0 रामदयाल मुंडा जी कहल हथ कि हियां बोलेक टाय गीत आर चलेक टाय नाच लागे।

खोरठा लोकगीतें परकीरति चित्रण भरल पूरल हे। पटतइर रूपे कुछ गीत देल जाइ रहल हे –

1.''बेरिया जे डुबी गेल, झींगा फूल फूली गेल
गांथू पिया झींगा फूल, खोंपा में लगाइब हो,
खोपा में लगाए पिया भेली समतुल हो,
चला पिया नाचे जाइब, रीझे बेयाकुल हो।

ई गीते झींगा फूल फूलेक बात कहल गेल हे। अइसे सोब फूल विहान बेराञ फूल हे मगुर झींगा फूल साइंझ पहर फूले हे, ऊ फूल बारीक झांटीञ एतना सुन्दर देखहे कि ओकरा माला गाथेक मन आइल। माला गांइथके खोपाञ लगायके सिंगार करेक मन करल। सिंगार करल बादे ऊ रीझे बेयाकुल हेइल आर पिया संग आखरा नाचे जाय खोजहीक।

2. कोना पतइ लाम्बा–लाम्बा, कोना पतइ चीरा हो
   कोना पतइ हरियर, फोरे गोले गोल हो?
   आमा पतइ लाम्बा–लाम्बा, तेतइर पतइ चीरा हो
   लेंबो पतइ हरियर, फोरे गोले गोल हो।

ई गीत सवाल–जवाब रूपे हे। पहिलेक कलिञ सवाल हे आर दूसर कलिञ जबाब हे। आम पतइ, तेतइर पतइ आर लेम्बो पतइ कर बात हे। आम पतइ लम्बा–लम्बा हेवहे तो तेतइर पतइ चीरा चीरा इयानि छोटे–छोटे हेवहे आर लेम्बो पतइ हरियर हेकहे।

3. कोना फूला फूलइ दइया। आगा धजा डरियाञ
   कोना फूला फूलइ फेड़ा डाइर हो।
   रे कोना फूला फूलइ दइया, लबरी पंडरिया हो
   कोना फूला मानुसेक आहार हो।
   आम्बा फूला फूलइ दइया, आगा–धजा डरियाञ
   कठर फूला फूलइ, फेड़ा डाइरे हो।
   रे लोटनी फूला फूलइ दइया लबरी–पंडरिया हो
   धना फूला मानुसेक आहार हो।

ई गीत चाचइर तर्जे गावल जाहे। ई गीते सवाल–जबाब रूपे गावल जा हे। पहिलेक कलिञ सवाल हे आर दूसर कलिञ जबाब। आम, कठर, लोटनी आर धान फूलेक बात कहल गेल हे। 'दइया' टेक लगाइ के चाँचइर गीत रूपे गावल जाहे आर जदि एकर नाञ देले झुमइर इया झुमटा रूपे गावल जात।

4. गोमतीक धारी–धारी, फूटलइ काँसी गो,
   नुनी गे, तोर मना, नइहरा चली गेल।
   कांसी फूल फूली गेल, आसा मोर बाढ़ी गेल
   देखी–देखी अँखिया टाटाय
   रे भादर कुहकल आय।

ई झुमइर तर्जे गावल जाइक गीत लागे। कांसी फूल फूलइते नूनीक (ससुराइरे डंगुवा बेटी छउवाक) मन नइहर जाइ आस जाइग जाहे, काहे कि आब करम नझिक आइ गेल से ले ऊ डहर (राह) देखहीक। राह देइख देइख ओकर आँइख टाटाय लागल हे।

हिन्दी साहिते कांसी फूल खिलेक माने शरद रीतु आवेक परिचय देहे। हियाँ खोरठा लोकगीते करम परब आवेक संकेत बतव हे। मेनेक बइरसा सिराय लागल, खेतेक काम सिराय गेल से ले थोरेक दिन खातिर ऊ नइहर जाइत। एहे पहर झारखण्ड छेतरे करम परब मनवल जा हे आर करम पुजानि (करमइतीन) डँगुवा बेटी छउवा। ऊ काम करे खातिर नइहर आवेक आस ओकर मने जाइग जा हे।

हाराबादिया गीते 'प्रकृति चित्रण' कर अड़गुड़ आटा –पाटा पावाहे। ई हाराबादिया गीत सोहरायेक चाँचइर गीते गावल जाहे। पटतइर रूपे देखा –

5. तकर ले अजगुता हाम्हुँ देखलो हो
   ओहो जेउता करे अजगुते
   रे करजी भीतरे माछी ढनके
   ओहउ जेउता, करे सहासें हो।

ई गीतेक माने हेल – (डुमइर पफोर भीतरेक पोका)

6. खुंटिये जनम लेलइ, गुदु फुचुन रे।
   दइया जेकर छउआ – पूता बगरल जाय,
   सभे रे छउआ–पूता बगरल जाय,
   सभे रे छउआ–पूता के–बीहा–दान देलइन हो
   दइया। आपने तो रह लइ कुँवार हो।

ई गीतेक माने हेल – कुम्हार चाक

7. मोहूँ देखले रहों बड़ा रे अजगुता हो
   दइया ओहो जो करे अजगुते।
   रे। मुंड़िया कारले जेउता, मोरबो ना करे
   अँखिया पेफरलें मोरी जाइ।

ई गीतेक माने हेल – ''कातारी'' ।

8. अलपे बसिएरा ले ले तो जनमावाँ
   अंगे अंगे बांधे तरवाइर
   रे मुंडिआहि गोंजे, सोने के कलगिया हे
   दइया! मांझे पेटे मिसी फरकाइ

ई गीतेक माने हे – जोंडरा गाछ।

9. ''कहाँ से उमड़ल आवे कारी बदरिया, बल सावरो गें
   बुंदे बुदे बरिसइ पनियाँ
   गरजिये – बरसिये, धने धने मलकइ बिहुलिया
   बलसावरो गे, उमंगे उमइड़ नदिया।''

ई गीत बइरसाक (पावस / वर्षा) दिने पावल झुमइर लागइ, एकर में करिया बदरी, बदरी गरजल, बिजली मलकल, पानी से नदी उमगल कर चित्रण हेल हे। ई नीयर एकर में प्रकृति चित्रण कर अड़गुड़ भाव हे।

डोहा गीत

डोहा गीत पुस परबेक पहर गावल जाहे। मकर सक्रांति खोरठा किबा झारखण्ड छेतरे जातरा (मेला) लाग हे। ई जातरा देखेक जाइक इया घुरेक बेराञ डोहा गीत गावल जा हे, एकर में कोनो बाजाक जरूरत नाञ पडे। खाली कुलकुली देले आर कुदले जाहथ। इयानि पहिले जातरा चइलके (पइदले) जा हलथ, मगुर आब तो मोटर, मोटर सइकिल, सइकिल में जातरा जाहथ, देले ई गीत तनी मधीम हेइ रहल हे, हो ना होइ एक दिन निंझाञ / सिराय जाइ। पटतइर रूपे कुछ गीत हे –

चाल भइया चाल गे,.....' जातरा हो
लइये देबउ लाल–लाल फुदनवा हो।

' हियाँ 'जगहेक नामेक जगहे जहाँ जातरा लागल रहहे हुवाँक नाम लेल जाहे।

उदासी / आसाढ़ी गीत

उधवा इया उदासी इया आसाढ़ी गीत खास कइर के बियोग सिंगारेक गीत लागे,जकरा कही आसाढ़ी कहल जाहे तो कहीं उदासी, कोइ एकरा उधवा नाम देल हय। आसाढ़ महिनाञ गावे जाइक चलते एकर नाम आसाढ़ी कहल जा हे।

पटतइर रूपे कुछ गीत हे –

बोरा तरे बाँसी बाजे, डिंडा छोडी ठाढ रे
टपकी–टपकी गिरइ लोर ...।
आपन पुरूखो दइया, मुख्वो ना पूछइ रे
परख पुरूखा पोछइ लोर .....।
आपन पुरूखो दइया, मुखवो ना पूछइ रे
परख पुरूखा पोछइ लोर .....।

ई गीत एगो साँवरो (नायिका) कर मनेक बेथा हे, जकर पिया (पति) मुँह से नाञ बोइल रहल हे, तब ओकर लोर दोसर कोइ पोछ हे केनेक सान्तवना देहे।

2. आसा जे देले साँवरो, देले ना भरोसवा हो
दइया, नीमा छाही राखले डंडाय।
नीमा पतइ झरीगेल, भंवरा गुंजरी गेल
आवे साँवरो नखइ बिसुआस हो।
सोझ सिरे कहइतले, दुइ–दुइ मन छाइत ले
पइते–पइते, पोसाए पीरित। आसा जे देले .....

9. खोरठा लोकगीते बिबिध चित्रण

खोरठा लोकगीते संस्कार, मउसम, प्रकृति, परब, श्रम आर सहियारी लोकगीतेक बाद्हूँ आरो लोक गीत पावाहे जे जीवने संस्कीरति के देखव हे।

एकरे विविध गीतेक मांझे राखल गेल हे। अइसन गीत के एकले इया समलाइत (समिलित) रूपे गावल जा हे। हियाँ पटतइर रूपे कुछ गीत देल जाइ रहल हे।

शिक्षा– पिया पोढ़े नाञ छोड़िहा
झलपफले उठी खनी
नीम दोतइन लोटे पानी
देबो हो पिया,पोढ़े नाञ छोड़िहा।

ई पढ़ेके भाव बतवल गेल हे।

जनी शिकार पहर पावल जाइक गीत–

बारो बछरे भइया जनी सिकार
बहिनी के मुड़े भइया पगरी बंधाइ
नाम जगवले भइया जनी सिकार।
चंपा, सिनगी, कइली दइक भइया
इयाद कराबे भइया जनी सिकार।

ढेलुवा गीत (झूला)

आमा तरे सुतले रे दादा
नीमा तरे रे चोर
भउजी केरी बिछिया रे दादा
लइये गेलइ रे चोर।

बांदर नाच कर गीत–

असना पातेक डसना, कोरइया पातेक दोना
दोने दोने मोद पियइ, हिलइ कानेक सोना।
बांदर के नचवे खातिर बांदर खेलवा ई गीत के गाव हे।

नसाबंदी–

नसाबंदी खातिर ई गीत गावल जाहे–
दारू पीके मारले मारा, रे मुँहजारा
गाइ–भंइस बेंच देले
दूध छोड़ी दारू पीले
तनिको नाञ लाज हो तोरा।

महंगाइ के लेइके ई गीत हे–

हाइ रे बिधि बड़ी दुखा भेल
तड़पी तड़पी जीया गेल
अढाइ टके चाउर बीके, बीके पाँच टके तेल
आर बाजरा गुंड़ी बीके, डेढ़ टके सेर।

ई सब गीत नावा जुगेक हे, सामयिक हे। ई सब गीत

कोइ नावां कविक रचना बुझा हे। ताव शिवनाथ प्रमाणिक ई गीत सबके बिबिध चित्राण रूपे आपन किताबे राखल हथ।

10. मउसम सम्बधो लोक गीतेक बाँटा–खूँटा–

शिवनाथ प्रमाणिक आपन खोरठा लोक साहित्य किताबें मउसम सम्बधी खोरठा लोक गीतेक बाँटा–खूँटा' करल हथ,– उफ ई नीयर हे– (गरमी मउसमें ;ग्रीष्म कालीन) गावल जाइक गीत के नाम हे– निरनियां मोटा ताल, मेहीताल, रसधरी आर उहरूवा। एकर में रसधारी मुइख हे।

बरखा (वर्षा कालीन) पहर इयानी सावन भादो महीनाञ पावल जाइक गीत में भदरिया, भटियाली, खास पेलिया, गोलवारी, मोदीयाली, धंसियाली, पिफंगपूफलिया हे, एकरा भरदरिया नामें जानल जाहे। एहे नाम मुइख हे।

जाड़ महीनाञ (शीत कालीन) गावल जाइक में डोहा मुइख हे, कारतिक से पफागुन महीना तइक गावल जाइक गीत शीतकालीन ;जाड़द्ध गीत कहा हे, एकर में चांचइर, घेरागीत, डोहा मुइख हे। सोहराय में चांचइर गावल जाहे। जाड महीनाञ सांइझ बिहान घेरा गीत गावल जाहे आर पूस महीनाञ डोहा गावल जाहे। घेरागीत में डपफली बजवल जाहे, छोहा में कोइ बाजा (वाद्य यंत्र) नाञ रह हे। चाँचइर में ढ़ोल–नगेड़ा कर प्रयोग हेव हे। बिहाक मउसमें डमकच, खेमटा गीत गावल जाहे, एकर में बाजा (वाद्य यंत्र) कर उपयोग नाञ हेव हे।

उधवा–असाढ़ महीनाञ उधवा गावल जाहे, ई विरह गीत हेवहे।

बारहमसिया– बारहो महीनाञ झुमइर चल हे, ई खास कइरके भदरियाक एगो रूप हे मगुर आब हर सांस्कृतिक कार्यक्रम में झुमइर नाचेक नावा परिपाटी चइल रहल हे, से कही के एकरा बारहमसियाक भीतरे राखल हथ।

11. खोरठा लोक गीतें सिंगार (शृंगार) रस

सिंगार (शंगार) एगो रस लागे जकर स्थायी भाव रति (काम) लागे। काम भाव जागेक, विकास करेक (बाढ़ेक) आर निंझाइक, ई सब रूप पावल जाहे। अइसे ई काम (Sex) भावना विपरीत लिंग में जागहे आर हम उमइर में इया ओहे आस पासे। मेनेक बंस बाढ़ेक (प्रजनन) आर आपन रइखा (आत्मरक्षा) खातिर ई भाव जाग हे। अइसे प्रजनन भाव मूल जरूर रह हे पर हर प्रेम कर उद्देश्य प्रजनन नाञ हेवहे। प्रजनन भाव तो मनवइ कर हर जीव–जन्तु, पशु–पक्षी संगेसग पूफल पतइयो में पावाहे एक नीयर ई सिंगार भाव सृष्टिक मूल में हे, एकर बिना ई संसार निराधार हे। कहल जा हे इयानि पौराणिक कथा से ई पता चल हे कि मानुस कर जनम 'मनु से हेल हे काहे कि प्रलय काल कर बादे एगो खाली मनु बचल रहे। उफ आपन के एकला पावल, ओकर कुछ मन नाञ लागे, हर जगन सुनापन देखे। मनुक दुख मेटवेक आर सृष्टि के चलवे खातिर श्रद्धा (सतरूपा)

ओकर पास आव हीक, जकर बरनन जयशंकर–प्रसाद (कामायनी में) लिखल हथ–

जो आकर्षण बन हॅसती थी
तिथि अनादि वासना वही
अव्यक्त प्रकृति उन्मीलन के
अन्तर में उसकी चाह रही ।''

हियां ई कहेक पाछु एहे भाव हे कि कोइयो जदि सूनापन हे, के दुखें हे तो। ओकर दुखके मेटवेक लागिन विपरीत लिगेक जरूरत पड़ हे।

काव्यशस्त्र में सिंगार रस सोबले बोड़ (श्रेष्ठ) मानल गेल हे। एकर स्थायी भाव रति (काम) हे। विभाव में आलम्बन विभाव नायक–नायिक/ पति–पत्नी/प्रेमी–प्रेमिका दुइयो (एक दुसर से) जुडल रह हे, अन्योयाश्रित रह हे। दुइयो में आपसी प्रेम रह हे।

उद्दीपन विभावेक नजइरे भी ई सोबले बोड़ हे, दैवी, प्राकृतिक–अप्राकृतिक–मानवी, जड़–चेतन सोब रह हे। ई सब हर जगह, हर समय, आर हर रीतुय पवा हे। सचारी विभावो एकर में सोबले बेसी 29 हे, जबकि बाकी दोसर में एतना नाञ हे। एहे सोब कर चलते एकरा सर्वश्रेष्ठ मानल गेल हे।

रस कर नजइरे देखल परे ई पावा हे–

(1) स्थायी भाव–सिंगार रसेक स्थायी भाव रति (काम) हे।

(2) विभाव– विभावेक दुरूप हे–आलम्बन विभाव आर उद्दीपन विभाव

(3) आलम्बन विभाव–नायक–नायिका/ प्रेमी–प्रेमिका / पति–पत्नी। एकर में एक आश्रय आर दुसर आलम्बन हे। मेनेक–जकर में भाव जागहे उफ 'आश्रय' आर जकर बाठे(प्रति) भाव जागहे, ऊ आलम्बन कहा हे। कखन्हु नायक आश्रय तो नायिका आलम्बन हे वहे, हुवे' जखन नायिका आश्रय हेव हीक तो नायक आलम्बन बइन जा हे। ई दुइयो में आपसी प्रेम जुड़ल रह हे।

(4) उद्दीपन विभाव–नायक–नायिकाक आपसी प्रेम परक हाव–भाव आर प्रयास (चेष्टा) सुनसान गाँव (जगह), बोन–झार–नदी धइर, खेत–गोठ, हंसी–ठठा–मजाक हेन–तेन।

(5) अनुभाव – सात्विक, कायिक, मानसिक आर आहार्य। ई चाइर रकमेक हेवहे।

(6) संचारीभाव–हाँसी–खुशी,मजाक,लाज–बीज,सक–सुबहा डर–भय–हेन–तेन

सिंगार रसेक दु भेद हे–संयोग सिंगार आर बियोग सिंगार। संयोग सिंगार–नायक–नायिका जखन पासे रह हथ, ऊ पहर मने उठल भाव के संयोग सिंगार कहल जाहे।

वियोग सिंगार–नायक–नायिका दुइयो जब फरक–फरक रहकर तब मने उठल भाव के वियोग सिंगार कहल जा हे।

खोरठा लोक गीते पावल जाइक संयोग सिंगार आर बियोग सिंगार के पटतइर रूपे हियाँ राखल जाइ रहल हे–

बेरिया जे डुबी गेल झींगा फूल फूली गेल
गाँथों संइया झीगा पूफल, खोपा में लगाइब हो।
गाँथी–गूँथीए पिया, भेली समतुल हो
चाला पियां नाचे जाइब, जिया बेयाकुल हो।
हियाँ संयोग सिंगार रस ई ले पावा हे कि दुइयो रीझ

रंगे हथ। सोब पूफल विहान पहर पूफल हे मगुर झींगा पूफल सांइझ पहर पूफल हे। झींगा पुफलेक माला बना नायिका आपन पति से कहहीक आर उफ पूफलेक माला के खोंपाय गुँथे कह हीक। हियाँ एकदम पवित्रा भाव, हे, अश्लील नाञ हे। दूइयो झूमइर खेले (नाचे) जायले तइयार हेवेक भाव झलके हे।

एगो दुसर गीत

ककर हांथें सोना–रूपा अंगठी हो, हंथवा चमकी गेलइ।
ओहो, ककर मुंडे बहुरा फूल गो खोंपवा धमकी गेलइ।।
रसिकाक हांथे सोना रूपा अंगठी हो, हंथवा चमकी गेलइ।
ओहो, सावरो के मुंडे बहुरा फूल, गो खोंपवा धमगी गेलइ।।
ई झुमटा गीत लागे, एकर में नायक–नायिकाक रूप सुन्दरइ बरनन हइ।

बियोग सिंगार रसेक गीत – खोरठाञ बियोग सिंगार संयोग सिंगार गीत से बेसी पावा हइ, आर ई गीत बेसी असाढ़ महीनाञ गावल जाहइ, से ले एकरा असाडी इया उधवा गीतों कहल जाहे। एगो पटतइर हे–

बोरा तरे बांसी बाजे
डींडा छाँडी ठाढ़ रे ..... हाइरे दइया
ढरकी – ढरकी गिरइ लोर
आपन पुरूख देवा मुखयोना पूछइ रे
परख पुरूखा पोछइ लोरा .....।

ई गीतेक भाव हे आपन पुरूस (पति) नाञ पूछ हइ, दोसर पुरूस ओकर लोर पोछा हइ। हियाँ बियोग सिंगार ई ले हइ कि आपन पुरूस मुँह भइर बात नाञ कहर हइ, मगुर दोसर पुरूस ओकर लोर पोछहइ मेनेक ढाठस दे हेइ।

आसा जे देलें सांवरो देले ना भरोसवा हो नीमा छांही राखले डांडाइ।

नीमा पतइ झरी गेल, भवंरा गुंजरी गेल आसा मोर टूटी गेल आबे सॉवरो नखइ बिसुआस

सोझ सिरे कहइ तलें
दुइ मन छोडइ तले,
पइते–पइते पोसाइ पीरीत हो।

हिंया एगो बेटी छउवा (सांवरो/नायिका) एगो बेटा छउवा (नायक/प्रेमी) के नीम गाछ तरे आइके डांडाइक (आस देखेक आसरा) देल रहइ कि हामें पाछु

आवबउ, मगुर ऊ आइल नाञ। हियां बियोग कर बात ई ले हइ कि आसरा देखइत–देखइत ढेइर पहर बीइत गेल मगुर ऊ आइल नाञ।

ई नीयर छोट–मोट रूपे पटतइरें जे गीत देल गेल हे ओकर से ई साफा फुरछाइ गेल कि खोरठाहूँ सिंगार रसेक गीत पावा हइ आर ओहो दुइयो भेद रूपे ।

12. खोरठा लोकगीतें छन्द विधान

लोकगीतें छन्द विधान खोजेक प्रयास करल गेल हे जहाँ आखर आर मातरा टोव (खोज) हव तो हुवाँ लय–सुर (राग) यति–गति, तुक, चरण ई सब तो पावाइत मगुर (मातरा इया आखर नाञ् काहे कि लोकगीत कोन्हो पंडित (आचार्य) कर रचल तो नाञ लागे, ई तो मनेक उद्‌गार हे जे स्वाभाविक (प्राकृत) रूपे हे। एकर में छन्देक मातरा आर आखर (वर्ण) खोजेक बात अनुचित हे। हाँ एकर में राग (रेघ) महतपूर्ण हे। रागेक तरजेक आधारे ही ओकरा छाँटल जाहे कि ई झुमरा लागे बा झुमइर।

चांचइर लागे बा गोवार भाँगा गीत। डॉ. कुमारी बसन्ती जी ''नागपुरी गीतों में छन्द रचना'' में लिखल हथ कि अइसन छन्द ''ध्वन्यात्मक छन्द'' कहा हे जे प्लुत ध्वनि से अनुसासित हवो हे एकरा डॉ. बी.एन. ओहदार छन्द बिधानेक लस्तंगाञा आपन एगो 'नोट में लिखल हथ। आर एहे आधारे खोरठाक लोकगीत के छन्देक लस्तगाञा खाँधल आर राखल हथ खोरठा नामजइजका विदुवान सभे। मगुर तो लोकगीतेंक राग–रेघ हर लोक गीतें पावा हे जे आपन रंगे रंगल हे।

खोरठाक छन्द विधानेक भीतरें जदि चाँइर, झुमइर झुमटा, डमकच, डोहा, आसाढी हेने तेन के राखल गेल हे तो ओकरे देखल जाय ओहे ले पटतइर रूपे कुछ लोकगीत राखल जाय लागल हे–

दोहा– चाल मँइया चाल गे
(जगह के नाम) ..... जतरा हो,
लइये देवउ लाल–लाल फुदना हो.....

(दोहा गीत जतरा (मेला) जाइक पहर गावल जा हे, ई जतरा प्राइ पुस–माघ महीनाञा खोरठा छेतरे लागहे जे सक्रांति जतरा से सुरू हेवहे से करीब माघ पूरनिमा तइक लागहे)

झुमटा डमकच गीत प्राइ बिहा–सादी पहर बोर इया कनिआइ के राइते तेल–हरदी लगवल बादे नाचेक पहर गावल जाहे।

झुमटा आर डमकच के राग रेघ फरक–फरक हेव हे।

ककरो–ककरो बिचार हे कि नागपुरी लोकगीते परभाव से बनल हे। जे बा हे, ओकर एगो पटतइर देखा–

झुमटा –केकर पोखरिएँ तलमल पनिया
केकर पोखरिएँ सेवार हे।
केकर पोखरिएँ रहुरे कतलवा

केछु बिगे बडका जाल हो।

ई सवाल रूपे गावल जाहे तो आगुक कली¦ जवाब (उत्तर) देल जाहे–

''ससुराक पोखरिएँ टलमल पनियाँ
भेंसुराक पोखरिएँ सेवार हों
सँइयाक पोखरिएँ रेहु रे कतलवा
देवरा बिगे बड़का जाल हो।

डमकच– ''नदी नाला घुरले
चिमटी साग तोर ले
भउजी गे .....
चुनमुन छउवा के
कादोञ लेटावले।''